फोर्ट कॉमिक्स
संख्या-27 मूल्य-20/-
समुद्र
मंथन
FREE WITH TWINCLE CHIPPS
DHEERAJ VERMA
महाडाइजे

फोर्ट कॉमिक्स
इस सैट के कॉमिक्स
समुद्र मंथन (महाडाइजेस्ट)
इस महाडाइजेस्ट के साथ एक मच्छर भगाने की
दैत्यों की बस्ती में (जंगारू)
इस कॉमिक्स के साथ एक आकर्षक पैंसिल मुफ्त
रूद्राक्षपुत्र और बम-बमा-
एक आकर्षक पैंसिल मुफ्त (त्रिनेत्राचार्य सी
घघेरिया (चौरंगी लाल)
इस कॉमिक्स के साथ एक आकर्षक पैंसिल मुफ्त
खूनी कबूतर
इस कॉमिक्स के साथ एक आकर्षक पैंसिल मुफ्त
मौत से मसखरी (फोर्ट वॉर
इस कॉमिक्स के साथ एक आकर्षक पैंसिल मुफ्त
आगामी सैट के कॉमिक्स
टंकाल शैतान (जंगारू) (महाडा
टिंकी और अद्भुत
महाजालसाज
रेत में दफन (सैन्डो)
गद्दार
इच्छाधारी रूहों का तिलिस्म
टिंकी और अद्भुत
प्रकाशक : बुक फोर्ट
106-ई, प्रथम मंजिल, कमला नगर, दिल्ली-7 (भारत)
: 2923955 Fax : 0091-11-2923955
031-61028 Cable : SIRINDCONS
Nos. : 3715183, 3723771
वितरक : विशाल पुस्तक भण्डार
4449, नई सड़क, दिल्ली-6
Phone : 2918117
अन्य शोरुम :
4/43, रुप नगर, दिल्ली-7
Phones : 2910805, 291680
38, ग्राउन्ड फ्लोर, वर्ल्ड ट्रेड सैंटर
कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1
Phones : 3715183, 37237
समस्त © कॉपीराइट प्रकाशकाधीन Subject to Delhi Jurisdiction Only

समुद्र मंथन
सम्पादक - अजय कुमार गुप्ता
ओह! अभी जीवित है!
गुर्र...ई.... तेरे खून का मरहम लगाऊंगा मैं अपने जख्मों पर, देवशक्ति।
चित्रांकन - बने सिंह राठौड़
सहयोग - जी. एस. राजावत गीता एवं विजय
लेखक - महेश दत्त शर्मा

पूरी पृथ्वी पर आतंक का पर्याय बन गया था दैत्यराज जंघासुर ।

सेनापति खुरांपाती । अपराधी को हाजिर किया जाए ।

अभी लीजिए महाराज ।

इस वक्त अपने दरबार
बबूला हुआ बैठा था

अपराधी को लाया गया -

हुम्म । क्या आरोप है इस पर ?

?!

महाराज । ये नील नगर का राजा है - नील गगन । इसने कर के रूप में सौ मनुष्यों को देने से इंकार किया ।

क्रोध से अंगारे की भांति दहकने लगी जंघासुर की आंखें ।
गुर्र... र्र...
...बागी है ये, इसने हमसे बगावत करने की जुर्रत की है
...जबकि हम हर मनुष्य राज्य से अपनी खुराक के वास्ते सौ मनुष्य प्रतिदिन लेते आए हैं । इसी से हमारा जीवन- यापन होता है ।
?!
हां महाराज । इसकी देखा-देख दूसरे राजा भी इसका अनुसरण कर सकते हैं ।
तुम ठीक कहते हो खुरापाती । जाओ, इसके टुकड़े-टुकड़े करके भिखारियों में बंटवा दो...।

चीत्कार उठा राजा नील गगन।
नहीं ऽऽऽऽ छोड़ दो मुझे..।
चलो।
तदुपरान्त उसका मांस भिखारियों में बांट दिया गया...
लेकिन खुरापाती को दया नहीं आई..।
ईऽऽऽ
खचाक
कचर... कचर...
चप्प... चप्प
राजा नील गगन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए खुरापाती ने।
वाह! बड़ा स्वादिष्ट मांस है।
कचर...कचर..
अजीब भिखारी थे जंबासुर की नगरी के। नील गगन के मांस की बोटियां तक चबा ग

फिर जंभासुर ने एक क्रूर आदेश दनदनाया... ।

सेनापति खुरापाती । पूरी पृथ्वी पर फैल जाओ और जो भी हमसे बगावत करने की कोशिश करें उसे खत्म कर दो ।

जी, दैत्यराज ।

जंभासुर का आदेश सुनते ही चल पड़ी दैत्य सेना... ।

हर... र...

हा.. हा..

गुर... र...

गुर... र...
दैत्यों से पंगा लेने वाला जीवित नहीं बचेगा खुरापाती के हाथों ।

शीघ्र ही खुरापाती पहुंच गया राजा मणिधर के दरबार में..।
आपका स्वागत है सेनापति खुरापाती...।
कहिए, कैसे आना हुआ ?
महाराज मणिधर। दैत्यराज जंघासुर का आदेश है कि आपके राज्य से प्रतिदिन एक हजार मनुष्य भिजवाये जाएं..।
...क्योंकि दैत्यों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है।
न..नहीं ऽऽऽऽ इस तरह तो जल्दी ही यहां मनुष्यों का अकाल पड़ जायेगा, खुरापाती।
स्तब्ध हो चीख उठे महाराज मणिधर..।
उदण्ड ! जुबानदराजी करता है खुरापाती से।
अंगार उगलने लगीं खुरापाती की आंखें..।
ले... मर।
खच्च
पल भर में खुरापाती ने राजा मणिधर की गर्दन धड़ से जुदा कर दी...।

र तो पूरे नगर में मारकाट मचा दी
रापाती और उसके साथी राक्षसों ने..।
सबको खत्म कर दो।
खच्च
खच्चाक
भागो
ईऽऽऽ
आऽऽऽ
ऽऽऽ
र मूली की तरह चट करने नरभक्षी राक्षस...।
हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ
राक्षसों के आतंक से...।
खच्चाक
ईऽऽऽ
..थर्रा उठी सम्पूर्ण मानवता।
सब खत्म। हा... हा... हा... हमसे मुकाबला करने चले थे।
अट्टहास कर उठा क्रूर खुरापाती...।

राज्य को श्मशान में बदल कर आगे बढ़ गई सेना-
अभी कई राज्यों को इसी सबक सिखाना होगा, तभी पर सत्ता कायम होगी महा जंघासुर की।
हुर्र...
धप्प... धप्प...
आह !
चारों ओर फैले पड़े थे रक्तरंजित शव ! मौत का सा सन्नाटा व्याप्त हो गया था महौल आज मानवता त्राहि-त्राहि कर उठी थी। ऐसे में भगवान भी न जाने कहां सो ग

खुरापाती का कहर बढ़ता गया और उसकी चपेट में एक-एक कर अन्य राज्य भी आने लगे थे...।
हा... हा... हा...
खच्च
टनाक
हाय
आज चक्रधरपुर में मौत का तांडव हो रहा था...।
इस तरह मार काट मचाता खुरापाती पहुंच गया चक्रधरपुर के दरबार में...।
नहीं। एक हजार आदमी रोज नहीं दे सकता मैं।
खुरापाती की मांग को ठुकरा दिया वीर राजा विक्रम ने...।
खच्च
आऽऽऽ
लेकिन मर तो सकता है न।
पलक झपकते ही खुरापाती का फरसा घूमा और...।
वीर राजा विक्रम की गर्दन कटकर दूर जा गिरी...।
खच्च
आऽऽऽ
ईऽऽ
फच्चाक
पूरा दरबार स्तब्ध रह गया था। इससे पहले कि सभी दरबारी, कुछ समझ पाते खुरापाती के फरसे ने उनके सिर भी धड़ से नीचे उतार फेंके...।

पूरी पृथ्वी चीत्कार कर उठी खुरापाती के आतंक से-
भागो SSS खुरापाती आया SSS
हा..हा..हा..
नहीं...ई...ई...
भागती कहां है छम्मक छल्लो ?
आSSS
स्सर्रांट
हा..हा..हा..
खुरापाती के नापाक हाथ प्रियंवदा की तरफ बढ़े और उसे उठा लिया...।
अनगिनत आदमी, औरतें और बच्चे खत्म कर दिए खुरापाती की राक्षसी सेना ने। इन्हीं में से एक थी प्रियंवदा...।
प्रियंवदा को खिलौने की भांति में उछाल दिया खुरापाती ने...।
?!
कलाबाजी खाती हुई...।
आह
धड़ाक
...ऋषि घोरगर्जन के समक्ष जा गिरी निरीह प्रियंवदा...

...न हो तुम, पुत्री ?
...खोलीं ऋषि घोरगर्जन ने...।
म...मैं... ऋषिवर...।
किंचित भयातिरेक से बोल नहीं फूटा प्रियंवदा का...।
फिर कुछ संयत होने पर...।
घबराओ नहीं, पुत्री। कहो, क्या कष्ट है तुम्हें ?
...वी पर दैत्यों ने आतंक मचा रखा है, ऋषिवर।
और नेत्र मुंदते चले गए ऋषि घोर गर्जन के-
हा.. हा..
?!
...कुछ बताती चली गई प्रियंवदा।
खुरापाती की खुरापातें साकार हो उठीं ऋषि घोरगर्जन के समक्ष।

नेत्र रक्ताभ हो उठे ऋषि घोरगर्जन के...।

ऋषि घोर गर्जन ने अपनी जटा का एक बाल तो

नहीं। मेरे होते पृथ्वी को गुलाम नहीं बना सकेंगे वो दुष्ट।

तड़..क..

और अभिमंत्रित जल बाल पर छिड़क दिया।

?!

कड़..ड़

जैसे ही बाल पर अभी अभिमंत्रित जल पड़ा तो एक जबरदस्त विस्फोट हुआ ऋषि घोरगर्जन की हथेली पर। चारों ओर प्रकाश फूट पड़ा जिससे आंखें चुंधिया गई प्रियंवदा की। ऐसा लगने लगा जैसे कोई महाशक्ति अवतार ग्रहण करने वाली हो...।

चमत्कारिक बाल से निरन्तर धुआं उठने लगा...।

शsss

और फिर पल-पल विकसित होता चला गया वह बाल एक मानवाकृति में..।

कुछ क्षण बाद धुआं साफ हो गया।अब शक्ति सम्पन्न मानव खड़ा था बाल के स्थान जिसका नाम था शिवाक्ष...।

शिवाक्ष नाम का वह शक्तिसम्पन्न मानव ऋषि घोरगर्जन के चरणों में नतमस्तक हो गया..।

प्रणाम ऋषिवर। मेरे लिए क्या आदेश है ?

वत्स शिवाक्ष, जाओ और पृथ्वी पर शांति स्थापना करो...।

दरअसल शिवाक्ष ऋषि घोरगर्जन का ही अंश था। ऋषि की सभी शक्तियां समा गई शिवाक्ष में।

...सृष्टि की अनन्त गहराईयों से बुलाया है मैंने तुम्हें, जाओ, अंत करो राक्षसों का।

जो आज्ञा ऋषिवर।

कल्याण हो, वत्स।

जाओ पुत्री। जल्दी ही राक्षसों का अंत होगा।

धन्यवाद ऋषिवर।

प्रियंवदा न जाने कहां खो गई शिवाक्ष के तेज को देख। उसे कुछ याद नहीं रहा लेकिन अंब उसे विश्वास हो गया था कि बहुत जल्द राक्षसों का अंत निश्चित है। शिवाक्ष ने एक पहली दृष्टि प्रियंवदा पर डाली और मन ही मन मुस्कुराते हुए अपने लक्ष्य की तरफ बढ चला...।

उधर खुरापाती की खुरापातें जारी थीं-

म... मैं... आपकी हर बात मानूंगा, सेनापति खुरापाती।

शाबास राजा भौंदूमल। आदमी काम के हो तुम।

तुम्हें इनाम देंगे हम।

धन्यवाद खुरापाती

तभी एक चीत्कार सुन हतप्रभ हो उठा खुरापाती...।

ओह !

हमारी रक्षा कीजिए सेनापति जी।

क्या हुआ खूनखराबा ? क्यों चिल्ला रहे हो ?

सेनापति जी। एक युवक ने सैकड़ों राक्षस मार दिए हैं। अब वह इसी ओर आ रहा है।

!?

एक अदने से युवक से पिट कर चले आए। चलो, मैं देखता हूं उसे।

कुछ क्षणों बाद-

ओह! ये तो गाजर-मूली की तरह काट रहा है मेरे साथियों को।

ओह!

आह

!?

भागो 55

दृश्य देख जड़वत रह गया क्रूर राक्षस खुरापाती...। बड़ा ही अजीब दृश्य था। शिवाक्ष खुरापाती के सैनिक-राक्षसों को ऐसे काट रहा था जैसे कोई किसान अपने खेत की फसल को काटता है...। अपने साथियों का हश्र देख अंगारों की भांति दहकने लगी उसकी आंखें।

क्रोध से फुंकार उठा खुरापाती-

नादान युवक...

...तुम्हें मौत दूंगा मैं। मौत।

?!

यही है इस दैत्य सेना का संचालक।

हवा में लहराया खुरापाती का फरसा...।

खुरापाती। मौत तुझे दूंगा मैं।

आह!

शिवाक्ष के भरपूर वार से छल पड़ा खुरापाती...।

लेकिन खुरापाती भी कम शैतान नहीं था-

ओह!

शिवाक्ष के कंधे को चीरता चला गया खुरापाती का फरसा...।

सेनापति खुरापाती से टकरायेगा तू, जिससे यमराज भी थर-थर कांपता है।
टनाक
ओह ! काफी शक्तिशाली है ये !
भीषण युद्ध छिड़ गया
योद्धाओं में-
टनाक
टन
पलक झपकते ही शिवाक्ष का घाव अपने आप भर गया और फिर शिवाक्ष ने खुरापाती के फरसे का वार अपनी तलवार से रोक लिया...
तलवारों की टंकार से गूंज उठी पृथ्वी
भरपूर ताकत का प्रदर्शन कर रहे थे दोनों योद्धा... खुरापाती निश्चल पड़ता जा रहा था... ।

टनाक
अचानक एक तेज प्रहार से फरसा दो टुकड़े हो गया खुरापाती का...
ओह ! मेरा अभिमंत्रित फरसा काट दिया !
?!
हड़बड़ा उठा खुरापाती... ।
अगले पल-
...मुझे अपनी शक्तियों का आह्वान करना होगा इसे खत्म करने के लिए।
हृ.. हर.. र..
टप
टप
अपनी तंत्र शक्तियों का आह्वान करने लगा खुरापाती... ।

प्रकट हुई खुरापाती की शक्तियां...!
गुर्र SSSSS
अपनी शक्तियों को प्रकट होते देख बाछें खिल उठीं खुरापाती की। इन शक्तियों के नाम थे कबोरा और पंचासुर...।
कबोरा...
हुर्र..ई..
...पंचासुर-
क्या हुक्म है स्वामी ?
इतना भयानक थी उसकी शक्ल जिसे देख मौत भी एक बार तो थर्रा उठे...।
पांच सिरों वाला अत्यन्त शक्तिशाली और मायावी राक्षस जो कई बार भूमण्डल पर तबाही मचा चुका था। दोनों ने खुरापाती से असमय बुलाने का कारण पूछा...।
जाओ, खत्म कर दो इसे।

अगले पल-
अब तू नहीं बचेगा, शिवाक्ष। हा.. हा.. हा..
तेरा ये ख्वाब हरगिज पूरा नहीं होगा, खुरापाती।
...च्यूंटी की मौत मारूंगा मैं तेरे इन गुलामों को।
गुर्र... ई...
मीठा-मीठा खून.. सुड़प...
गुर्र..ई..
पृथ्वी डगमगाने लगी थी कबोरा और पंचासुर के पदचापों से. बड़ा ही लोमहर्षक मुकाबला था। अपने दम्भ में दोनों राक्षस भूल गए थे कि आज उनका मुकाबला साधारण मनुष्य से नहीं वरन् महर्षि घोरगर्जन के अंश से पैदा महासुरमा शिवाक्ष से ही रहा था...।

पहला बार पंचासुर ने किया-
हुर्र... र्र... घातक किरणों से बचेगा नहीं तू।
पंचासुर पहले अपने बचाव का इंतजाम कर तू।
कड़... कड़ाक...
शूं ssss
लेकिन-
कड़ाक
पंचासुर के तीव्रआघात को विफल कर दिया शिवाक्ष ने...।
ओह!
हा.. हा.. हा.. पंचासुर तुझे ज्यादा अवसर नहीं दूंगा मैं।
इस बार पंचासुर ने अग्नि वर्षा की...।
फांय
?!
ओह! ये शक्ति भी नष्ट!
झनाक
जल वर्षा कर, अग्नि वर्षा को शांत कर दिया शिवाक्ष ने...।

इस बार नहीं बचेगा तू शिवाक्ष।
शांय
कड़ाक
ओह!
यंकर क्रोध से गरज उठा पंचासुर...।
लेकिन शिवाक्ष सतर्क था...।
इस बार ज्योंही मुगदर घुमाया पंचासुर ने-
?!
कचाक
तिलिस्मी मुगदर के सैकड़ों टुकड़े कर दिए शिवाक्ष ने...।
मुगदर के कटते ही सारी शक्तियां नष्ट हो गई पंचासुर की।
खर्च्च
खर्चाक
खच्च
खच्च
खच्च
पंचासुर को टुकड़ों में विभक्त करती चली गई शिवाक्ष की तलवार...।

कबोरा जो मंत्रमुग्ध हो रोमांचक मुकाबला देख रहा था, चीत्कार उठा अपने साथी की मौत

शिवाक्षऽऽऽ

आह!

भड़ाक

धड़ाक

उफ!

तेरा खून बहाकर अपने साथी की मौत का गम मनाऊंगा मैं, शिवाक्ष।

तड़ाक

शिवाक्ष को संभलने का मौका नहीं दिया कबोरा ने।

तड़ाक

फ़ाऽऽ

शांय

उफ!

कबोरा के घातक वारों ने अंतरात्मा तक को सिहरा कर रख दिया शिवाक्ष की...।

लेकिन इस बार—।

बहुत हुआ कबोरा

...अब तुझे कोई मौका नहीं दूंगा मैं।

शांय

कबोरा को कोई अवसर नहीं दिया शिवाक्ष ने...

खच्च

आह!

कबोरा की गर्दन धड़ से जुदा कर दी शिवाक्ष की तलवार ने...।

लेकिन गर्दन पुनः कबोरा के जिस्म से जा चिपकी...

हा.. हा.. हा..

!?

आश्चर्य के समुद्र में गोते लगाने लगा शिवाक्ष...।

गुर्र... र्र...
हू.. हा.. हा.. हा..
ओह ! एक के स्थान पर दो !
अब एक के स्थान पर दो कबोरा खड़े थे वहाँ... ।
घोर मायावी था कबोरा
दोनों को खत्म कर दूंगा मैं ।
हवा में लहराई शिवाक्ष की तलवार... ।
अंधाधुंध वार करता चला गया शिवाक्ष... ।
एक कबोरा को दो भागों में चीर डाला तलवार ने... ।
दूसरे को भी नहीं बख्शा... ।
लेकिन...

बोरा को खत्म करना ना आसान नहीं था... ।
मेरे काटने से ये और बढ़ते जा रहे हैं । क्या करूं ?
हूर्र... र्र...
कबोरा के जिस्म के जितने टुकड़े होते जाते उतने और कबोरा बढ़ते जाते थे । असंख्य कबोरा खड़े थे शिवाक्ष को घेरे । एक बार को शिवाक्ष जैसा वीर भी भयभीत हो उठा... ।
ी प्रकट हुए षि घोरगर्जन... ।
वत्स शिवाक्ष, पहले खुरापाती को खत्म करो । क्योंकि इनकी मौत खुरापाती के जिस्म में सुरक्षित है ।
गुर्र...र्र...
ओह ! तो ये बात है ।
ऋषि घोरगर्जन को प्रकट होते देख खुरापाती बुरी तरह शंकित हो उठा । उसे अपनी मौत दिखाई देने लगी । इधर शिवाक्ष की आंखों में नई ज्योति भर उठी और वह खुरापाती की ओर लपका... ।

अपनी जान बचाने के लिए भाग उठा खुरापाती... ।
हम्फ.. हफ्फ...
बचकर भाग नहीं सकेगा तू
खुराप
गुर्र..
शिवाक्ष ने मौके की नजाकत को पहचाना
शांय
तलवार खींच मारी शांति दूत शिवाक्ष ने... ।
!?
द्रुत गति से भाग रहा था खुरापाती... ।
बच नहीं सका खुरापाती... ।
ईऽऽऽ
खच्च
तलवार ने सीना चाक कर दिया उसका... ।
आह !
जमीन की ओर आकृष्ट चला गया खुरापाती...

शायी हो गया ढ़ाई मन
खुरापाती... ।
ये तो गया काम से ।
...कबोरा भी नष्ट होते चले गए-
बड़ाक
म हिचकी ली खुरापाती ने
ापाती के साथ ही... ।
धड़ाम
लेकिन जंघासुर अभी बाकी था... ।
बड़ाम
...लेकिन जंघासुर अभी बाकी है ।
शिवाक्ष ने अपनी दिव्य शक्ति तलवार खुरापाती के जिस्म से बाहर खींच ली । अब उसका लक्ष्य था दैत्य सम्राट जंघासुर... ।

उधर खूनखराबा जैसे तैसे जंघासुर के दरबार में पहुंचा और उसका सारा हाल कह सुनाया-
क्या बकते हो, खूनखराबा ?
जंघासुर को जिसे सुनकर जंघासुर आग बबूला हो उठा और
खूनखराबा के गाल पर एक जबरदस्त तमाचा जड़ दिया...।
कौन शिवाक्ष ? उसे हमारे सामने हाजिर करो, खूनखराबा।
म...मैं ठीक कह रहा हूं, महाराज। सेनापति खुरापाती मारे गए हैं। शिवाक्ष ने खत्म किया है उन्हें।
जंघासुर ने फिर स्थिति को समझा
अपना प्रलयकारी आदेश दनदनाया...
...हम अपने हाथों खत्म करेंगे उस पिल्ले को।
?!
मन ही मन कांप उठा था खूनखराबा लेकिन फिर उसने निश्चय किया कि
के हाथों मरने से अच्छा है कि शिवाक्ष जैसे दिव्य पुरुष के हाथों ही मरे ताकि
जन्म सार्थक हो सके...।

इससे पहले खूनखराबा वहाँ से जाता वहां एक बिजली की मानिंद तेज प्रकाश
फूटा...।
ओह !
?!
और प्रकट हुआ शांति दूत शिवाक्ष...।
तुम ? कौन हो तुम ?
वही ! जिसने खुरापाती का वध किया।
हतप्रभ हो उठा जंघासुर...।
महाराज ! यही है शिवाक्ष। इसी ने खत्म किया है सेनापति खुरापाती को।
ओह !
शिवाक्ष, तू खुद ही मेरा भोजन बनने को आ गया है। हा.. हा.. हा..
तनिक भी विचलित नहीं हुआ था दैत्यराज जंघासुर...।

...तेरा ही नाश्ता करूंगा आज मैं।
हा.. हा.. हा..
जंघासुर के मुंह से ज्वाला फूट पड़ी और उसका भाड़ सा मुख खुलता चला गया...।
इसका नाश्ता करवाऊंगा मैं जंघासुर।
शांयSSS
नहींSSS
खूनखराबा को जंघा
ओर फेंका शिवाक्ष ने
चप्प
ईंSSS
जंघासुर के मुंह में जा गिरा खूनखराबा...।
ओह! बहुत
है ये
ईंSSS
पुंज निकला शिवाक्ष की तलवार से...।
फूंSSSS
आह!
यहां से भागने में ही भलाई है।
ओह!
...लेकिन मेरा नाम भी दैत्यराज जंघासुर है।
जंघासुर के मुख से तेज आंधी सी निकली और खूनखराबा का शरीर शिवाक्ष की तरफ जा उड़ा...।
पल सुलगकर अंगार बन चुका था जंघासुर
शिवाक्ष! ले मर।
कड़... चटर...
घातक किरण शक्ति निकली जंघासुर के हाथों से...।
ओह। घातक शक्ति। इसे रोकना होगा।
चटर
भीषण वेग से टकरा कर नष्ट हो गई दोनों शक्तियां...।
कड़ाक

इस बार शिवाक्ष की तलवार हवा में लहराई तो उससे निकली अत्यन्त घातक किरणें...!
आह !
चटर चटर
ओह ! ये घातक वार भी सह गया ।
लेकिन यह वार भी सह गया दुराचारी जंघा
शिवाक्ष एक के बाद एक वार करता चला गया-
चटाक
आह !
चटर चटर
उफ !
तीव्र किरण शक्ति ने
चटर
भड़ाम
आई ऽऽऽ
जंघासुर को सम्भलने का जरा भी अवसर नहीं दिया...!

आह ! मेरी शक्तियां क्षीण होती जा रही हैं। मुझे महाशक्ति का आह्वान करना होगा।
ओह ! इतने घातक वार सहकर भी जीवित है।
चटर
इधर आश्चर्यचकित था शिवाक्ष भी...!
महाशक्ति का आह्वान करने लगा जंघासुर-
कड़ाक
क ड़..
क्षणोपरान्त ही-
अब मौत निश्चित है शिवाक्ष की।
कटर
अपनी तिलिस्मी शक्तियों से छेड़-छाड़ करने लगा जंघासुर...!

तेज तिलिस्मी अंधड़ निकला तिलिस्मी यंत्र से...।
तिलिस्मी आंधी ! ले उड़ो इसे मेरे तिलिस्मी महल में।
हा...हा...हा...
तिलिस्मी आंधी बढ़ चली शिवाक्ष की ओर...
ज़ुम ऽऽऽ
ओह ! बड़ी गर्मी है इस आंधी में।
सांय

देखते ही देखते तिलिस्मी आंधी ले उड़ी शिवाक्ष को- तिलिस्मी महल की ओर-।
ज़ुमऽऽऽ
ओह!
हा.. हा.. हा.. अब मेरे हाथों बचेगा नहीं।
मेरी शक्तियां क्षीण होती जा रही हैं।
आह!
क्षणोंपरान्त ही तिलिस्मी महल में कैदी बना खड़ा था शिवाक्ष...।

तिलिस्मी महल में आते ही तेरी सारी शक्तियां मुझ में समा गई हैं, शिवाक्ष...!

आह !

...अब तू एक साधारण मनुष्य है। हा.. हा.. हा..

इसे तड़पा-तड़पा कर मारूंगा

?!

ऋषि घोर गर्जन का स्मरण किय शिवाक्ष ने..।

ऋषि घोर गर्जन सहायता करो।

पुकार बढ़ चली-

... सहायता ऋषि घोर गर्ज

...आगे और आगे-

और शीघ्र ही पुकार जा पहुंची ऋषि घोरगर्जन तक...।

सहायता.. ऋषि... घोर... गर्जन...

शिवाक्ष का आर्तनाद ?

ओह ! मुझे जाना होगा।

शिवाक्ष का आर्तनाद सुन व्यथित हो उठे ऋषि घोरगर्जन...।

ऋषि घोर गर्जन चल पड़े तिलिस्मी महल की ओर--।

जंघासुर की मौत ही मुक्ति प्रदान कर सकती है शिवाक्ष को।

शीघ्र ही-

यही है तिलिस्मी महल।

ज्यों ही ऋषि घोर गर्जन ने तिलिस्मी महल में घुसने के लिए कदम बढ़ाया-
सावधानSSS सावधानSSS सावधानSSS तिलिस्मी महल में घुसते ही तुम्हारी सारी शक्तियां छिन जाएंगी ऋषि घोर गर्जन।
देववाणी सुन स्तब्ध हो कदम जड़ हो गये महर्षि घोर गर्जन के...।
प्रणाम देव मैं क्या करूं देव ?
के प्रश्न के जवाब में
समुद्र मंथन करो। समुद्र से निकली शक्ति से ही अंत संभव है-जंधापुर और तिलिस्मी महल के तिलिस्म का।
जैसी आज्ञा, देव।
और समुद्र मंथन करने के लिए कृतसंकल्प हो चले थे ऋषि घोरगर्जन। उनका
था हिन्द महासागर...।
समुद्र तट की ओर चल पड़े ऋषि घोर गर्जन।
शीघ्र ही समुद्र तट पर...।
समुद्र मंथन के लिए...।
विचारमग्न खड़े थे ऋषि घोरगर्जन और सामने अनन्त तक फैला पड़ा था हिन्द महासागर...।

तड़ाक
...कई युवकों की जरूरत है मुझे।
फिर मन ही मन कुछ तय किया ऋषि घोरगर्जन ने और... बालों की एक मोटी जटा उखाड़ कर मंत्र शक्ति से..।
भनाक
उसे शक्ति सम्पन्न युवकों में बदल दिया ऋषि घोरगर्जन ने..

ऋषि घोरगर्जन के बालों से प्रकट हुए शक्तिमान युवक नतमस्तक हो गये ऋषि चरणों में और उन्होंने एक सुर में महर्षि से पूछा..।
समुद्र मंथन की तैयारी करो, वत्स...।
हम हाजिर हैं, देव।
जो आज्ञा देव।
समुद्र मंथन हेतु तत्पर हो उठी ऋषि घोरगर्जन की शक्तियां
विशाल पर्वत के समीप विचार मग्न खड़े ऋषि घोरगर्जन..।
अभी एक पर्वत की और आवश्यकता है मुझे।
उनके नेत्रों से निकली अग्निधार जा टकराई पर्वत से..।
चटर्र चटर

जड़ से उखड़ पड़ा विशाल पर्वत...।
और उड़ चला समुद्र की ओर..।

कड़

जूमऽऽऽ

...और...।

मथनी के रूप में काम आयेगा यही पर्वत खण्ड।

धड़ाम

छपाक की ध्वनि के साथ के साथ ही
लगा समुद्र के किनारे वो विशाल पर्व

फिर ऋषि घोरगर्जन के आदेश पर..।

शृंखला के रूप में पर्वत खण्ड से
लिपटते चले गए युवक।

बु...रू...म...

अब ऋषि घोरगर्जन के सामने समस्या थी
खण्ड को महासागर के बीचों बीच ले जाने

तदुपरान्त...।

अब इसे समुद्र में उतारना होगा।

ऋषि घोरगर्जन के मुंह से निकली तेज आंधी...।

फूंऽऽऽ

जूमऽऽऽ

...उड़ चला पर्वत खण्ड...।

और जा टकराया समुद्र की सतह से...।

छपाक

फिर आरम्भ हुआ एक अभूतपूर्व समुद्र मन्थन ठीक उसी तरह जिस प्रकार कभी देवताओं और राक्षसों ने मिलकर इस पृथ्वी पर पहले भी किया था...।
?!
घर्र..घर्र..घर्र...
एक कलियुगी समुद्र मंथन! किन्तु इसका उद्देश्य सत्य की रक्षार्थ था
जुटी हुई थी ऋषि घोरगर्जन की समस्त शक्तियां प्रबल वेग से ठाठें
रहा था समुद्र का विशाल वक्ष स्थल !

दिन, महीने, वर्ष व्यतीत होते रहे...।
घर्र.. घर्र..घर्र...
इस समुद्र मंथन से समुद्री जीव-जन्तु बेचैन हो उठे थे। विशाल समुद्र को भी नाज हो रहा था अपने आप पर क्योंकि उसके गर्भ से शीघ्र ही जन्म लेने वाली थी एक महाशक्ति...।
...समुद्र मंथन जारी रहा...। वक्ष स्थल दहाड़ता रहा समुद्र का...।
की घड़ियां समाप्त होने जा रही थी अब...।
घर्र..
घर्र...
उधर समुद्र मंथन हो रहा था...।
देवशक्ति के प्रकट होने के आसार नजर आने लगे हैं।
घर्रSS घर्रSS
गुड़..
गुड़..
इस वक्त पूरा समुद्र अपने उफान पर था। पूरी पृथ्वी हिल उठी थी इस महा कार्य से...।

उधर समुद्र के भीतर मची हुई थी भयंकर हलचल...।

धरती, आकाश और पाताल तीनों लोग उद्वेलित हो उठे थे इस समुद्र मन्थन से। समुद्र के विशाल गर्भ में एक रहस्यमय आकृति उभर रही थी जिसका नाम था देवशक्ति। देवशक्ति में समस्त देवताओं की शक्तियां विद्यमान थी...।समुद्र के सभी जीव जन्तु पुकारे जा रहे थे देवशक्ति को...।

और फिर प्रकट हुआ देवशक्ति...।
घुम्म गुर्र... ई...
देवशक्ति के प्रकट होते ही ऋषि घोरगर्जन के शक्ति पुरुषों के साथ-साथ विशाल पर्वत समुद्र की अथाह जल राशि में समाधिस्थ होता चला गया...।
?!
गुड़प... गुड़प...
छपाक
समुद्र की सतह पर चलता देवशक्ति आ पहुंचा ऋषि घोरगर्जन के समक्ष...।
और-
गुर्र... र्र..
प्रणाम ऋषिवर...।
प्रणाम, वत्स...।
देवशक्ति को देख महर्षि घोरगर्जन के ललाट पर बिखरी चिन्ताओं की लकीरें फीकी होने लगी थी...।

....देवशक्ति ! जाओ, अपने नभ के उद्देश्य को सार्थक करो ।
जो आज्ञा, देवर्षि ।
देवशक्ति ने ऋषि घोरगर्जन की आंतरिक व्यथा को समझ लिया था और वह चल पड़ा था दैत्य राज जंभासुर को सबक सिखाने...
पृथ्वी हिलने लगी थी देवशक्ति की पदचाप से... ।
गुर्र... र्र...
धप्प... धप...
देवशक्ति के आगमन की सूचना जंभासुर से छिपी न रही... ।
उधर तिलिस्मी महल में मची थी हलचल.. ।
दैत्यराज । देवशक्ति इसी ओर आ रहा है ।
जाओ पिशाचराज खत्म कर दो उसे ।
अगर वह मारा गया तो उसकी सारी शक्तियां हमारी होंगी फिर दुनिया की कोई ताकत नहीं मार सकेगी हमें ।
कपटी और दंभी जंभासुर ने देवशक्ति की शक्ति को पहचानने से मुंह फेर लिया था.. ।

चल पड़ा पिशाचराज देवशक्ति से टकराने..।
ओह ! ये तो यहीं आ पहुंचा ।
यहीं है तिलिस्म महल । लेकिन ये कौन है ?
यहां का प्रहरी लगता है ।
ठहर, अभी देखता हूं तुझे ।
फुस्स
ओह !
...भयंकर प्रहार किया पिशाचराज ने..।
फिर अभी देवशक्ति संभल भी न पाया था कि-
गुर्र..ई..
धड़ाम
जमीन से जा टकराया देवशक्ति...।
इसे सबक सिखाना ही होगा ।
आह !
धाड़

अगले ही पल-
जंघासुर के गुलाम..!
?!
...ये पकड़ी मैंने तेरी पूंछ ।
करय
फुर्ती से संभला देवशक्ति और उसने पूंछ पकड़कर पिशाचराज को हवा मे घुमाया
बेचारा पिशाचराज भूल गया था कि उसका मुकाबला देवशक्ति से है...।
आह!
शांऽऽऽऽऽ
...और...
...परे उछाल दिया देवशक्ति ने पिशाचराज को...।
भड़ाऽ..ऽ..ऽ
धड़ाक
आह!
शांय
ये ले।
महल के शीर्ष से जा टकराया पवन वेग से हवा में उड़ता हुआ पिशाचराज...।

तेजी से संभला पिशाचराज

ओह ! अभी जीवित है।

तुझे मौत देगा पिशाचराज।

फा ऽऽ य ऽऽऽ

आग का रैला निकला उसके भाड़ से मुंह से...।

गुर्र... र्... तेरे खून का मरहम लगाऊंगा मैं अपने जख्मों पर देवशक्ति।

भक्क

ओह ! इसके पास भी काफी तिलिस्मी शक्तियां हैं।

धुम्म

गर्र...र्... अब तुझे कोई अवसर नहीं दूंगा पिशाचराज।

उम्मीद न थी पिशाचराज को कि कोई उसे इस तरह जलील कर देगा। क्रोध से भभक उठा पिशाचराज और...।

देवशक्ति की तिलिस्मी शक्तियां देख अन्तरात्मा तक थर्रा उठी पिशाचराज की।

अगले ही पल देवशक्ति के प्रचड चरण प्रहार से नीचे लुढ़कता चला गया पिशाचराज का भारी भरकम जिस्म...।
धड़..धड़..धड़..
आऽऽऽ
मौत बनकर छा गया देवशक्ति, पिशाचराज पर..।
देवशक्ति के शरीर से प्रकाश के तेज किरणें फूट पड़ीं
याऽऽऽ
जिससे चौंधिया गया पिशाचराज का सम्पूर्ण अस्तित्व...।
ईऽऽऽ
देवशक्ति का रौद्र रूप देख सूखे पत्ते सा कांप उठा पिशाचराज...।
एक पूरा वृक्ष जड़ से उखाड़ कर खींच मारा देवशक्ति ने...।
ले, मर पिशाचराज।

भड़ाक
आह !
तीव्र और घातक वार से चीत्कार कर उठा पिशाचराज!
ओह । पिशाचराज भी मारा गया ?
...लेकिन मेरे हाथों नहीं बचेगा ये ।
और पिशाचराज के मरते ही जंघासुर अपनी मांद से बाहर निकल पड़ा जिसे देख कर देवशक्ति का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा... ।
जंघासुर ! इसी की मौत के लिए जन्म लिया है मैंने ।
भचाक
आ..ईsss ईsss
वृक्ष के प्रचण्ड प्रहार से चीथड़े उड़ गए पिशाचराज के... ।

तिलिस्मी त्रिशूल प्रकट हुआ जंघासुर के हाथ में-
इधर आग उगल उठीं जंघासुर की आंखें...।
झनाक
देवशक्तिऽऽऽऽ तेरी मौत के साथ ही मुझे प्राप्त होगी दिव्यशक्ति।
त्रिशूल से निकली घातक किरणें-
?!
शंय ऽऽ शूंऽऽऽ
जिनका लक्ष्य था देवशक्ति...।
कड़..कड़ाक..
उफ !
बड़ा घातक वार है।
इस घातक प्रहार ने..।
...तिनके की तरह उछाल दिया देवशक्ति को..।

रूका नहीं दैत्यराज जंघासुर ।

तेरी मौत ही पिशाचराज की आत्मा को....

जंघासुर के मायावी त्रिशूल से तीन विस्फोटक किरणें निकलीं... ।

...मुक्ति...

और आंखें से दो शोले... ।

...प्रदान करेगी, देवशक्ति ।

और साथ ही उसके एक हाथ की उंगलियों से पांच प्रचंड किरणें... ।

जंघासुर का हर वार...

...देवशक्ति...

...सहता चला गया...

जंघासुर के ये घातक प्रहार भी कुछ न बिगाड़ सके ऋषि घोरगर्जन के इस अदना से शिष्य था... ।

...लेकिन इस बार-
?!
अ...आह !
ठनाक
जंघासुर को जकड़ लिया अग्नि जाल ने।
म...मेरी शक्तियों का क्या हुआ?
मेरा तिलिस्म टूटता जा रहा है।
आह !
झनाक
अब इसे और अवसर देना घातक होगा।
धड़..ड़..ड़..
बौखला उठा जंघासुर।
इस महाशक्ति जाल से तू हरगिज नहीं बच सकेगा जंघासुर।
देवशक्ति की उंगलियों से अग्निजाल निकल चला-
हा.. हा.. हा..

...दैत्यराज जंघासुर ! पृथ्वी पर आतंक फैलाने वाले की एक ही सजा हो सकती है...।

मौत

धड़ाक

आह !

अ...आह !

देवशक्ति की दहाड़ से कांप उठा धरती का सीना... ।

नहीं ऽऽऽ

छ...छोड़ दो मुझे, देवशक्ति ।

घातक प्रहारों से अन्तरात्मा तक चीत्कारकर उठी जंघासुर की । गिड़गिड़ा उठा जिन्दगी की भीख मांगने को वो शैतान... ।

क्रींऽऽ यांऽऽऽ
तेरी मौत ही तेरा साथ छोड़ेगी अब, जंघासुर।
निर्णायक दौर में आ पहुंचा था वह युद्ध वार पर वार होते रहे जंघासुर पर लेकिन...।
बड़ी सख्त जान था जंघासुर-
भड़ाक
तड़ाक
एक बार को देवशक्ति भी विस्मय से भर उठा था।
ओह ! बड़ी सख्त जान है। इसकी मौत के लिए 'दिव्यशक्ति' प्रहार करता हूं।
भीषण घातक वारों को सहता चला गया वह शैतान जो कभी वार करता था लेकिन आज खुद तिल-तिल मरने को मजबूर सा हो चला था...।
अंततः देवशक्ति की आंखों से निक
अकाट्य किरणें...।

दिव्यशक्ति प्रहार किया देवशक्ति ने-
हाथों से निकली प्रचण्ड ज्वाला... ।
शूंऽऽऽ
क्रीं.. आं... आं...
आ..ई..ई...
...मुंह से निकला ज्वालामुखी के लावे का सैलाब जो मोम की भांति पिघलता चला गया जंघासुर को... ।
चीत्कार कर उठा जंघासुर। नेत्र मुंदते चले गये शैतान राक्षस के... ।

और क्षणोपरान्त ही टुकड़ों में विभक्त हो गया जंघासुर का आसुरी जिस्म शिवाक्ष भी सीधा ऋषि घोरगर्जन के पास जा पहुंचा...।
जंघासुर की मौत के साथ ही...
...नष्ट होता चला गया तिलिस्मी महल...
और मुक्त होता चला गया शिवाक्ष
...देवशक्ति वापस
छपाक
....समुद्र में जा समाया।
और ऋषि घोर गर्जन-
तुम्हारा काम समाप्त हुआ, वत्स शिवाक्ष।
जब-जब पृथ्वी पर जंघासुर पैदा होंगे, शिवाक्ष जन्म लेता रहेगा।
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड गर्व कर उठा था ऋषि घोरगर्जन पर...। चारों तरफ खुशियों का माहौल फिर से बन चला था...।
यह कॉमिक आपको कैसी लगी, अपने सुझाव हमें इस पते पर अवश्य भेजें
अजय कुमार गुप्ता 4449, नई सड़क, दिल्ली-110006

समाप्त

A.H.W. FORT SERIES

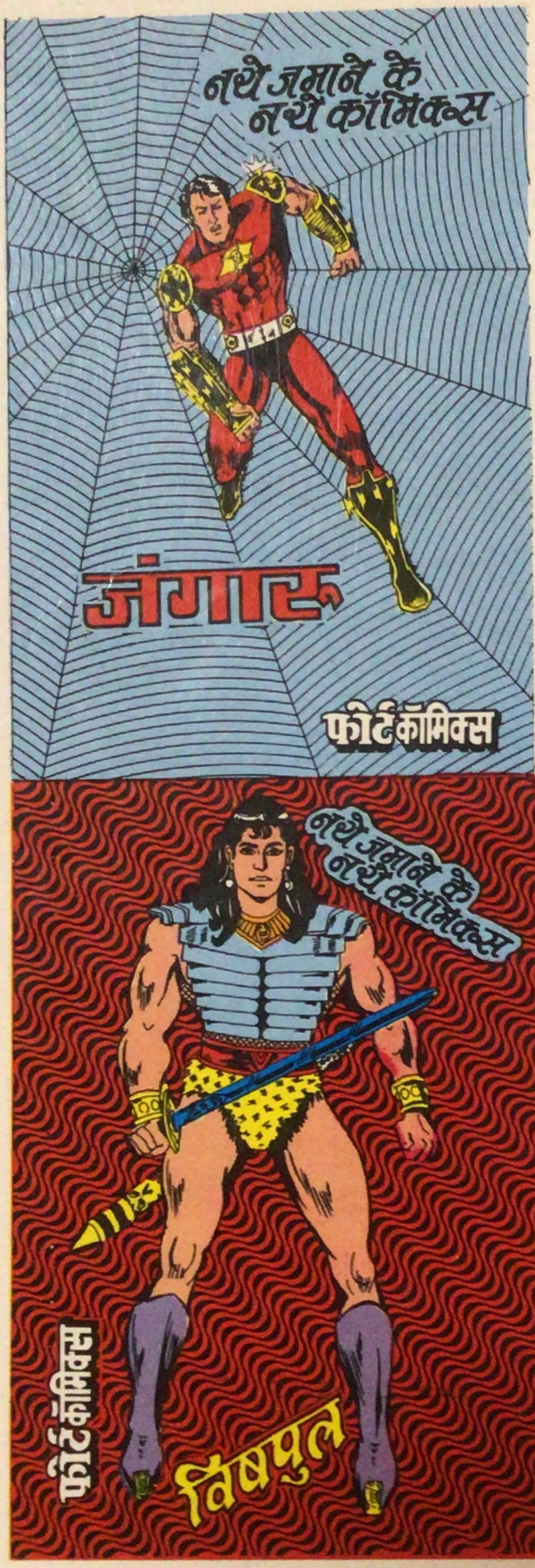

मुद्रक: धर्मेंद्र आर्ट प्रोसेस फोन : 5708762